Ramazanul Kareem Mananay Ke Pur Kaif Andaaz (Hindi)
हफ़्तावार रिसाला : 445
Weekly Booklet : 445

रमज़ानुल करीम

मनाने के पुर कैफ़ अन्दाज़

(सफ़ह़ात : 24)

पहले इसे पढ़िए

अल्लाह पाक ने दुनिया में मुख़्तलिफ़ क़ौम व नस्ल को मुख़्तलिफ़ रंग व सूरत में पैदा फ़रमा कर दुनिया के मुख़्तलिफ़ मक़ामात में बसाया है। रमज़ानुल करीम अल्लाह पाक का महीना है, रमज़ानुल करीम की जलवागरी होते ही लोगों का दिल इ़बादत, तिलावत, नमाज़ और रोज़े की त़रफ़ माइल हो जाता है। दिल का येह मैलान कोई नई बात नहीं बल्कि सदियों से येह मुआ़मला ऐसे ही है। अब भी इस के नज़ारे दुनिया भर में आ़म हैं।

इस रिसाले में न सिर्फ़ गुज़शता सदियों में इ़बादात के ह़वाले से मुसलमानों के कुछ मामूलात का ख़ूबसूरत बयान है बल्कि कमो बेश ग्यारह ममालिक के मौजूदा मामूलाते रमज़ान को भी ज़िक्र किया गया है। اَلحمدُ لِلّٰہِ الکریم इस रिसाले की तय्यारी के लिए कमो बेश 30 ममालिक के आ़शिक़ाने रसूल से मालूमात लेने की कोशिश की गई है। अल्लाह करीम की तौफ़ीक़ से आइन्दा सालों में रमज़ानुल करीम के मौक़अ़ पर मज़ीद ममालिक के आ़शिक़ाने रसूल के मालूमाते ज़िन्दगी इसी अन्दाज़ से बयान करने का सिलसिला जारी रहेगा। अल्लाह करीम हमें अपना प्यारा प्यारा महीना रमज़ानुल करीम ख़ैर से नसीब फ़रमाए और फिर अपनी रिज़ा के मुत़ाबिक़ इ़बादत, तिलावत, नमाज़, तरावीह़ और नवाफ़िल की कसरत के साथ इसे गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। नीज़ अल्लाह करीम का करीम महीना नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े हम से राज़ी हो कर रुख़्सत हो।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

तालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व बेहिसाब मग़्फ़िरत

अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त्तारी मदनी عُفِیَ عنہ

(शोबा : हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)

26 रजब शरीफ़ 1447 हिजरी, 16 जनवरी 2026

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

रमज़ानुल करीम मनाने के पुर कैफ़ अन्दाज़

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 24 सफ़हात का रिसाला "रमज़ानुल करीम मनाने के पुर कैफ़ अन्दाज़" पढ़ या सुन ले उसे माहे रमज़ान की महब्बत से नवाज़ कर ख़ूब नेकियां करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और उसे वालिदैन समेत बिला हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला दे कर अपने प्यारे सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ के सबब मग़्फ़िरत हो गई (वाक़िआ़)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सालेह़ सूफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि एक मुह़द्दिस (यानी अह़ादीसे मुबारका बयान करने वाले आ़लिम) साह़िब को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा मुझे बख़्श दिया। पूछा : किस सबब से ? कहा : अपनी किताबों में नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक लिखने के सबब। (تاریخ ابن عساکر، 54/113، رقم:6646)

बेकार गुफ़्तगू से मेरी जान छूट जाए हर वक़्त काश ! लब पे दुरूदो सलाम हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

मिस्र में हिलाले रमज़ान देखने का रिवाज

कहा जाता है कि आठवीं सदी हिजरी में मिस्र के शहर "अब्यार" में 29 शाबान शरीफ़ को एक मह़फ़िल होती, जिस का नाम "यौमे रुकबा" था, वहां के आ़शिक़ाने रसूल इस दिन को "रमज़ान करीम का चांद देखने का इन्तिज़ार करना" कहते थे। उन की आ़दत थी कि शाबान शरीफ़ की उन्तीसवीं तारीख़ को अस्र के बाद शहर के उ़लमाए किराम और मोअ़ज़्ज़ज़ (यानी इ़ज़्ज़तदार) लोग क़ाज़ी के घर

जमा होते, दरवाज़े पर इ़मामा शरीफ़ बांधे एक फ़र्द आवाज़ लगाने के लिए ख़ड़ा होता था। जब शहर का कोई इ़ज़्ज़तदार शख़्स आता तो वोह शख़्स आने वाले मेहमान का इस्तिक़बाल करता। क़ाज़ी और मजलिस में बैठे लोग खड़े हो कर उस का एह़तिराम करते, जब सब जमा हो जाते तो क़ाज़ी और उन के साथ तमाम लोग सुवारी पर सुवार हो कर शहर से बाहर एक ऊंची जगह जाते, जहां माहे रमज़ान का चांद देखने का एहतिमाम होता। उस मक़ाम को क़ालीनों और बिछौनों से आरास्ता किया जाता फिर मग़रिब की नमाज़ के बाद सब ह़ज़रात शहर की त़रफ़ वापस लौट आते। वापसी पर (माहे रमज़ानुल मुबारक का इस्तिक़बाल इस शानो शौक़त के साथ होता कि) उन के आगे आगे शमएं, मशअ़लें और फ़ानूस होते और दुकानदार अपनी दुकानों पर शमएं रौशन कर देते थे। (رحلۃ ابنِ بطوطہ، ص27)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

आ़शिक़ाने माहे रमज़ान, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ लिखते हैं :

नज़र चांद रमज़ान का आ गया है   येह क्यूं हर त़रफ़ शोरे सल्ले अ़ला है ?
दरे रह़मत इक बार फिर वा हुवा है   ख़ुशा माहे रमज़ान फिर आ गया है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हिलाले रमज़ान और मामूले अमीरे अहले सुन्नत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَلٰی اِحْسَانِہٖ ! सालहा साल से आ़शिक़ाने माहे रमज़ान, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ आ़शिक़ाने रसूल के साथ शाबान शरीफ़ की 29 तारीख़ को **"हिलाले रमज़ान"** की ज़ियारत का एहतिमाम फ़रमाते हैं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ रमज़ाने करीम की आमद पर बड़े ख़ुश नज़र आते हैं, चन्द सालों से

इस पुर कैफ़ महफ़िल के मनाज़िर लाइव दावते इस्लामी के चैनल और अमीरे अहले सुन्नत के फ़ेसबुक पेज पर दिखाए जाते हैं, जैसे ही हिलाले रमज़ान नज़र आता है अमीरे अहले सुन्नत की आंखों से ख़ुशी के आंसू जारी हो जाते हैं। हदीसे पाक में मौजूद नए महीने के चांद को देखने की दुआ पढ़ या पढ़ा कर रो रो कर दुआ मांगते हैं और आशिक़ाने रसूल को माहे रमज़ान की आमद की मुबारक बाद देते हैं। प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब हिलाल देखते तो येह दुआ पढ़ते :

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهٗ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِيْمَانِ، وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ، رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ۔ (المستدرک، 5/405، حدیث:7837)

क़मरी (यानी इस्लामी) महीने की पहली दूसरी और तीसरी रात के चांद को हिलाल कहते हैं इस के बाद की रातों के चांद को क़मर कहते हैं। (مرقاۃ المفاتیح، 5/283، تحت الحدیث:2428) येह दुआ पहली, दूसरी और तीसरी रात तक पढ़ सकते हैं। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 419)

रमज़ान करीम का चांद देखने का मस्अला

याद रखिए ! पांच महीनों का चांद देखना "वाजिबे किफ़ाया" है। ﴿1﴾ शाबान ﴿2﴾ रमज़ान ﴿3﴾ शव्वाल ﴿4﴾ ज़ी क़ादा ﴿5﴾ ज़िल हिज्जा। शाबान का इस लिए कि अगर रमज़ान का चांद देखते वक़्त अब्र या ग़ुबार हो तो येह तीस पूरे कर के रमज़ान शुरूअ़ करें और रमज़ान का रोज़ा रखने के लिए और शव्वाल का रोज़ा ख़त्म करने के लिए और ज़ी क़ादा का ज़िल हिज्जा के लिए और ज़िल हिज्जा का बक़र ईद के लिए। (फ़तावा रज़विय्या, 10/451,449)

वाजिबे किफ़ाया का मतलब येह है कि अगर शहर से चन्द लोगों ने इन महीनों का चांद देख लिया तो सब की तरफ़ से वाजिब अदा हो गया और अगर किसी ने भी न देखा तो सब तारिके वाजिब (यानी वाजिब को छोड़ने की वज्ह से गुनहगार) हुवे लिहाज़ा इन महीनों का चांद देखिए اِنْ شَآءَاللّٰه वाजिबे किफ़ाया अदा करने का सवाब मिलेगा।

आज अ़त्तार ख़ूब है शादां हां ज़माने में आ गया रमज़ां
इस की बख़्शिश का होगा अब सामां वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

पूरा माह नेकियों में गुज़ारने वाले

"क़ूस" (मिस्र का) एक निहायत अ़ज़ीम शहर है, यहां मसाजिद और मदारिस बड़ी तादाद में हैं। मशहूर सय्याह (tourist) इब्ने बतूता अपने सफ़र नामे में लिखते हैं कि शहर के बाहर शैख़ शहाबुद्दीन बिन अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) की ख़ानक़ाह है यहां सूफ़ियों का रश रहता है इस शहर में हर साल माहे रमज़ान में ऐसे नेक लोग जमा होते हैं जो दुनियावी मुआ़मलात से फ़ारिग़ हो कर (सारा महीना) इ़बादत में मश्ग़ूल रहते हैं। (رحلۃ ابنِ بطوطہ، ص47)

दावते इस्लामी और पूरे माह रमज़ान का एतिकाफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार पूरे रमज़ानुल मुबारक का एतिकाफ़ कर ही लेना चाहिए हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक का एतिकाफ़ भी फ़रमाया है। (بخاری، 1/671، حدیث:2041)

सह़ाबिए रसूल, ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : रमज़ान शरीफ़ का चांद नज़र आते ही ग़ुस्ल कर के (बाज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) एतिकाफ़ में बैठ जाते। (غنیۃ الطالبین، 1/341)

अल्लाह पाक की करोड़ों रह़मतें नाज़िल हों, ह़क़ीक़ी आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर, आप ने चन्द साल पहले पूरे माहे रमज़ान के एतिकाफ़ का इरादा फ़रमाया और इस की तरग़ीब दिलाई तो सैंकड़ों आ़शिक़ाने रमज़ान दावते इस्लामी के मदनी मरकज़ फ़ैज़ाने मदीना में पूरे माहे रमज़ान के

एतिकाफ़ के लिए जमा हो गए फिर उस साल के बाद से अब 2026 तक हर साल पूरे माहे रमज़ान का एतिकाफ़ हो रहा है और इस के लिए दावते इस्लामी का एक बा क़ाइदा शोबा बन चुका है ताकि इस इबादत के महीने को अल्लाह पाक के पाकीज़ा घर **"मस्जिद"** में गुज़ार कर अल्लाह पाक की रिज़ा हासिल करने के लिए कोशिशें की जाएं। वैसे भी एतिकाफ़ का लुग़वी माना है : **एक जगह जमे रहना**, मतलब येह कि मोतकिफ़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाहे अज़मत में उस की इबादत पर कमर बस्ता हो कर एक जगह जम कर बैठा रहता है। इस की येही धुन होती है कि किसी तरह इस का परवरदिगार इस से राज़ी हो जाए।

اَلْحَمْدُلِلّٰه आशिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के तहत पूरे माहे रमज़ान के एतिकाफ़ का सिलसिला मुल्क में कमो बेश 29 मक़ामात पर रहता है। इस इल्मी व रूहानी माहौल में क़ुरआने करीम दुरुस्त पढ़ने का तरीक़ा, सुन्नतें, आदाब, मुख़्तलिफ़ दुआएं और फ़र्ज़ उलूम, नमाज़, वुज़ू, ग़ुस्ल और रोज़ा वग़ैरा के ज़रूरी अहकाम बताए और सिखाए जाते हैं। तरग़ीब और शौक़ दिलाने के लिए दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में "आशिक़े" रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोहबत में एतिकाफ़ करने वाले चन्द मोतकिफ़ीन दावते इस्लामी के तअस्सुरात पेश किए जाते हैं, आप भी पढ़िए और पूरे माहे रमज़ान के एतिकाफ़ के मुतअल्लिक़ अपना जेहन बनाइए : **एक मोतकिफ़ का कहना है** : पूरा माहे रमज़ान हज़ारों इस्लामी भाई रंग व नस्ल, क़ौम और ज़बान से बालाए ताक़ हो कर एतिकाफ़ में भाई भाई बन कर वक़्त गुज़ार रहे हैं, दावते इस्लामी गोया इस्लाम की हक़्क़ानिय्यत (यानी सच्चाई) दिखा रही है।

एक मोतकिफ़ कुछ यूं कहते हैं : फ़ैज़ाने मदीना में आने से पहले मुझे बोलने की तमीज़ नहीं थी, लड़ना झगड़ना, आवारागर्दी करना मेरा काम था।

اَلْحَمْدُلِلّٰه मैं ने येह सब काम छोड़ दिये हैं, येह एतिकाफ़ मेरी ज़िन्दगी का पहला एतिकाफ़ है और ज़िन्दगी में पहली बार मैं ने मुकम्मल रमज़ाने करीम के रोज़े रखे हैं, अब हर रमज़ान में पूरे रोज़े रखूंगा। कोई कहता है कि पहली बार एहसास हुवा है कि रमज़ान इस तरह भी गुज़ारा जा सकता है ! तो कोई कहता है ज़िन्दगी में कई रमज़ान आए और गुज़र गए हमें यहां आ कर पता चला कि माहे रमज़ान की कितनी अहमिय्यत है। तमाम आशिक़ाने रसूल की ख़िदमत में इलतिजा है कि दावते इस्लामी के दीनी माहौल में कम अज़ कम एक बार पूरे महीने के एतिकाफ़ की ज़रूर सआदत पाइये।

प्यारे इस्लामी भाई चले आओ तुम दीनी माहौल में कर लो तुम एतिकाफ़
ख़ाली दामन मुरादों से भर जाओ तुम दीनी माहौल में कर लो तुम एतिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

शामी आशिक़ाने रमज़ान की इफ़्तारी

शाम के दारुल ख़िलाफ़ा "दमिश्क़" के बारे में लिखा है कि वहां के लोगों की एक बड़ी ख़ूबसूरत बात येह है कि वहां रमज़ान करीम में कोई भी शख़्स अकेला रोज़ा इफ़्तार नहीं करता। बड़े (यानी मालदार) लोग अपने साथियों को दावत देते हैं और ग़रीबों को भी अपने साथ इफ़्तार कराते हैं। ताजिर हज़रात भी ऐसे ही करते हैं जबकि ग़रीब और गांव देहात के रहने वाले हर रात एक दूसरे के घर या किसी मस्जिद में जमा होते हैं, हर एक जो कुछ साथ लाया होता है, वोह सब मिल कर इफ़्तार करते हैं। (رحلۃ ابن بطوطہ، ص97)

सख़ी बुज़ुर्ग

हज़रते हम्माद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه रमज़ानुल मुबारक की हर रात 50 आदमियों को

अपने दस्तरख़्वान पर बुलाते जो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के साथ रोज़ा इफ़्तार करते और जब ईद का दिन आता तो हर एक को कपड़े और सौ दिरहम इनायत फ़रमाते। (الجواہر المضیۃ فی طبقات الحنفیہ، 1/224) अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ऐ आशिक़ाने रमज़ान ! रमज़ान करीम में रोज़े के साथ साथ सदक़ा व ख़ैरात में भी इज़ाफ़ा कर देना चाहिए क्यूंकि इस माहे मुबारक में नेकियों का सवाब बहुत ज़ियादा बढ़ जाता है। ज़हे नसीब ! ग़रीब रोज़ेदारों, नादारों, सफ़ेद पोश रिश्तेदारों वग़ैरा की माली इमदाद की, तरावीह और दीगर इबादात की भी सूरत हो जाए। बेशक कई आशिक़ाने रमज़ान वक़्ते इफ़्तार मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इफ़्तारी के स्टॉल्ज़ लगाते हैं लेकिन घरों में मौजूद ग़रीब पर्देदार, रोज़े दार ख़वातीन इन नेमतों से कैसे फ़ायदा उठाएं ? ना बालिग़ छोटे बच्चे जिन पर अभी रोज़े फ़र्ज़ नहीं वोह भी इफ़्तार की इन रौनक़ों को देखने और खानों से महरूम हो जाते होंगे अगर हमारे दस्तरख़्वान पर रंग ब रंगे शरबत, जूस, उम्दा खाने की डिशें, कई क़िस्म के फल (फ्रूट) और दीगर कई नेमतें मौजूद हैं तो हम अल्लाह पाक का शुक्र अदा करें और इस के शुक्राने में अपने इस पुर तकल्लुफ़े त़आम (यानी खाने के बेहतरीन एहतिमाम) से अपने पड़ोसियों, सफ़ेद पोश रिश्तेदारों और मसाजिद व मदारिस में इल्मे दीन पढ़ने पढ़ाने वालों के लिए भी इन्तिज़ाम करें।

फ़रिश्तों के सरदार के साथ हाथ मिलाने का नुस्ख़ा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने ह़लाल खाने या पानी से (किसी मुसलमान को) रोज़ा इफ़्तार करवाया, फ़रिश्ते माहे रमज़ान में उस के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं और जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) शबे क़द्र में उस के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं। (معجم کبیر، 6/262، حدیث:6162)

एक और ह़दीसे पाक में है : जो रोज़ादार को पानी पिलाएगा अल्लाह पाक उसे मेरे ह़ौज़ से पिलाएगा कि जन्नत में दाख़िल होने तक प्यासा न होगा।

(ابنِ خُزَیمہ، 3/192، حدیث:1887)

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो ह़लाल कमाई से रमज़ान में रोज़ा इफ़्तार करवाए रमज़ान की तमाम रातों में फ़रिश्ते उस पर दुरूद भेजते (यानी रह़मत की दुआ करते) हैं और शबे क़द्र में जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) उस से मुसाफ़ह़ा करते (यानी हाथ मिलाते) हैं और जिस से जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) हाथ मिलाएं उस की आंखें अश्कबार हो जाती हैं और उस का दिल नर्म हो जाता है।

(جمع الجوامع، 7/217، حدیث:22534)

इस्लाम में पड़ोसियों को सब से पहले इफ़्तार करवाने वाले

रिज़ाए इलाही के लिए इस्लाम में सब से पहले अपने पड़ोसियों को इफ़्तार में खाना खिलाने वाले ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا हैं, आप ने ही सब से पहले रास्ते में दस्तर ख़्वान बिछाया। (المستطرف، 1/313)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अफ़्रिक़ा के डाकू और एह्तिरामे रमज़ान

शुमाली अफ़्रिक़ा के सह़राई अ़लाक़ों में वाक़ेअ़ एक तारीख़ी ख़ित्ता जिसे **"बिलादे हक्कार"** कहा जाता है, जहां आठवीं सदी हिजरी में बरबर क़बीले रहते थे। येह लोग अपनी सह़राई ज़िन्दगी के एतिबार से सख़्त मगर बाज़ अवक़ात मेहमान नवाज़ भी थे। क़ाफ़िलों के गुज़रने के रास्तों पर क़ब्ज़ा कर के इन से मह़फ़ूज़ रास्तों वग़ैरा के लिए टेक्स लेते थे। (क़ुरबान जाएं माहे रमज़ाने करीम के कि) रमज़ान करीम में वोह न तो क़ाफ़िलों को नुक़्सान पहुंचाते और न कोई और रुकावट डालते बल्कि अगर रास्ते में कोई चोर सामान चुरा लेता तो उसे भी जाने देते थे।

سُبْحٰنَ اللّٰہ रमज़ान करीम की बरकतों के क्या कहने, अल्लाह पाक की ना फ़रमानी से हमेशा ही बचना चाहिए लेकिन अगर कोई गुनहगार शख़्स बा बरकत वक़्त या बा बरकत मक़ाम की निस्बत की वज्ह से गुनाह करने से बाज़ आ जाए तो येह अदब व एहतिराम बसा अवक़ात हमेशा के लिए अल्लाह पाक की ना फ़रमानी से बचाने का सबब भी बन जाता है जैसा कि

एक नेकी ने गुनाहों की आदत छुड़ा दी (वाक़िआ)

सिलसिलए क़ादरिय्या रज़विय्या अत्तारिया के बारहवें पीरो मुर्शिद, हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र शिबली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं एक क़ाफ़िले के साथ मुल्के शाम जा रहा था, रास्ते में डाकुओं की जमाअ़त ने हमें लूट लिया और सारा माल व अस्बाब अपने सरदार के सामने ढ़ेर कर दिया, सामान में से एक शक्कर और बादाम की थेली निकली, सारे डाकुओं ने उस में से खाना शुरूअ़ कर दिया मगर उन के सरदार ने उस में से कुछ न खाया, मैं ने पूछा : सब खा रहे हैं मगर आप क्यूं नहीं खा रहे ? उस ने कहा : **मैं रोज़े से हूं।** मैं ने हैरत से कहा : तुम लूट मार भी करते हो और **रोज़ा** भी रखते हो ! सरदार बोला : अल्लाह पाक से सुल्ह़ के लिए भी तो कोई राह बाक़ी रखनी चाहिए। हज़रते सय्यिदुना शैख़ शिबली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : कुछ अ़र्से बाद मैं ने उसी डाकुओं के सरदार को एहराम की हालत में त़वाफ़े ख़ानए काबा में मश्ग़ूल देखा, उस के चेहरे पर इबादत का नूर था और मुजाहिदात ने उसे कमज़ोर कर दिया था, मैं ने हैरान हो कर उस से पूछा : क्या तुम वोही शख़्स नहीं हो ? वोह बोला : जी हां ! मैं वोही हूं और सुनिए ! उसी रोज़े ने अल्लाह पाक के साथ मेरी सुल्ह़ करवा दी है। (روض الریاحین، ص293)

जब आई जोश पे मेरे करीम की रह़मत गिरा जो आंख से आंसू दुर्रे यगाना हुवा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

रमज़ान सेल सेल सेल

ऐ आशिक़ाने रमज़ान ! रमज़ानुल करीम की तशरीफ़ आवरी पर इस्लामी ममालिक में मामूलाते ज़िन्दगी बदल जाते हैं, ऑफ़िसिज़ और कारोबारी अवक़ात में नुमायां तबदीलियां नज़र आती हैं, मुलाज़िमीन की ड्यूटी की टाइमिंग कम हो जाती हैं ताकि वोह आसानी से रोज़े रखें और रात में इबादात वग़ैरा भी कर सकें। मालूमात के मुताबिक़ दुनिया के कई ममालिक बल्कि ग़ैर मुस्लिम अक्सरियत ममालिक में भी रमज़ान करीम की आमद पर मुख़्तलिफ दुकानों, बाज़ारों और शॉपिंग मॉलज़ वग़ैरा पर "रमज़ान सेल" लगती हैं। जिन में बिलख़ुसूस वोह अश्या जिन का सहर व इफ़्तार से तअल्लुक़ होता है (चाहे वोह खाने की हों या दीगर इस्तिमाल की) इन पर अच्छी ख़ासी डिस्काउन्ट सेल्ज़ लगाई जाती हैं, बाज़ अश्या की ख़रीदारी पर एक के साथ एक मुफ़्त (by one get one free) की ऑफ़र्ज़ से आशिक़ाने रमज़ान फ़ायदा उठाते और रमज़ान करीम की नेमतों से फ़ैज़याब होते हैं।

अफ़सोस सद अफ़सोस ! इस के बर अक्स बाज़ ममालिक ऐसे भी हैं जहां मुसलमानों की एक बड़ी तादाद मौजूद होने के बावुजूद माहे रमज़ान के मौसमे पुर बहार में आशिक़ाने रमज़ान के लिए डिस्काउन्ट तो दूर की बात आम दिनों के मुताबिक़ भी क़ीमतें नहीं होतीं बल्कि वोह अश्या जिन का तअल्लुक़ ख़ास सहरी और इफ़्तारी से होता है उन की क़ीमत आस्मान को छूने लगती है। ग़रीब तो ग़रीब, दरमियाने तबक़े वालों के लिए भी फल ख़रीदना मुश्किल हो जाता है येही नहीं बल्कि वोह आइटम्ज़ जो सारा साल नहीं बिकते वोह भी इस माहे मुक़द्दस में बेच दिये जाते हैं क्यूंकि खाने वालों और फ़ास्ट फ़ूड की ख़ूब कसरत होती है।

ज़हे नसीब ! हम येह समझें कि माहे रमज़ान मालो दौलत जमा करने का नहीं बल्कि नेकियां जमा करने का महीना है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की माहे रमज़ानुल मुबारक के हवाले से चन्द नसीहतें पढ़िए :

जन्नत के तीन हुरूफ़ की निस्बत से तीन इरशादाते अमीरे अहले सुन्नत

﴾1﴿ रमज़ानुल करीम में नोट कमाने के बजाए "नेकियां कमाने" पर तवज्जोह देनी चाहिए। (मदनी मुज़ाकरा : 22 रमज़ान शरीफ़ 1442 हिजरी बादे तरावीह़)

﴾2﴿ मुसलमानों को सस्ता माल बेच कर रमज़ानुल मुबारक में नेकियां कमाइए कि रमज़ानुल मुबारक माल नहीं बल्कि नेकियां कमाने का महीना है।

(मदनी मुज़ाकरा : 1 रमज़ान शरीफ़ 1443 हिजरी)

﴾3﴿ रमज़ानुल मुबारक, नेकियां करने वालों और जन्नत में जाने वालों का सीज़न (season) है। (मदनी मुज़ाकरा : 16 रमज़ान शरीफ़ 1443 हिजरी बादे अ़स्र)

क़दर कर भाई ! माहे रमज़ां की कर इ़बादत ख़ुदाए रह़मां की
रह़मते ह़क़ का तुझ पे हो साया वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

मदनी इल्तिजा

काश ! वोह हुकूमती इदारे जो खाने पीने की अश्या की क़ीमतों पर मुक़र्रर हैं, बिल उ़मूम सारा साल और बिल ख़ुसूस इस माह में शरीअ़त के दाइरे में रहते हुवे इन उसूलों का कुछ इस त़रह़ निफ़ाज़ करें कि ग़रीबों का भला हो बल्कि उन के भले से اِنْ شَآءَاللّٰه आप का भी भला होगा नीज़ इन के दिलों से निकलने वाली दुआएं आने वाली बलाओं और आफ़तों को दूर कर के जन्नत में पहुंचा सकती है।

नेक बादशाह

कहते हैं : सुल्त़ान अबू इस्ह़ाक़ अपने अत़राफ़ के अ़लाक़ों के सलात़ीन में से बड़े सलात़ीन में शुमार होते थे, इस नेक दिल बादशाह की एक आ़दत येह थी कि वोह हर रोज़ अ़स्र की नमाज़ के लिए जामेअ़ मस्जिद आता और नमाज़े अ़स्र के बाद क़िब्ले की दीवार से तकिया लगा कर बैठता और क़ारी ह़ज़रात इस के सामने ऊंचीं

लकड़ी की कुर्सी पर बैठ कर सूरए फ़त्ह और सूरए मुल्क की तिलावत करते। इस पुर सुकून माहौल में इन की तिलावत की आवाज़ें दिलों को नर्म कर देतीं, रोंगटे खड़े हो जाते और आंखों से आंसू जारी हो जाते फिर बादशाह अपने घर वापस चला जाता। माहे रमज़ान में वोह हर रात सादा बिस्तर इस्तिमाल करता था। इफ़्तार में सब से पहले वोह सरीद खाता जो एक छोटे प्याले में होता उस में दाल, घी और शक्कर छिड़का होता। येह बरकत के लिए पेश किया जाता क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सरीद की दीगर खानों पर फ़ज़ीलत इरशाद फ़रमाई है, इस लिए येह (सरीद) सब से पहले पेश किया जाता। इस के बाद दीगर खाने पेश किये जाते और पूरे माहे रमज़ान की रातों में येही त़रीक़ा अपनाया जाता। (رِحلۃ، ص 260)

सरीद किसे कहते हैं ?

मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अम्जदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : (सरीद) गोश्त के शोरबे में रोटी तोड़ कर बनाया जाता है येह खाना इन्तिहाई लज़ीज़ भी होता है और खाने में सहल और ज़ूद हज़म (यानी जल्दी हज़म होने वाला है) इन ख़ुसूसिय्यात की वज्ह से अहले अ़रब को सब खानों से ज़ियादा पसन्द था। (نزہۃ القاری شرح صحیح البخاری 4/437) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : सब से पहले सरीद ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने तय्यार किया। (مرقاۃ المفاتیح، 8/264، تحت الحدیث:4488 ملخصاً)

अल "मुस्त़रफ़" में है कि सब से पहले रोटियों का चूरा कर के उसे शोरबे में भिगोने वाले (यानी सरीद बनाने वाले) रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दादाजान ह़ज़रते हाशिम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हैं। (المستطرف، 1/313) ह़दीसे पाक में है : बरकत तीन चीज़ों में है, मुसलमानों के इज्तिमाअ़, त़आ़मे सरीद और त़आ़मे सह़री में।

(معجم کبیر، 6/251، حدیث:6127)

नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सब से पसन्दीदा खाना

ह़दीसे पाक की सब से क़ाबिले एतिमाद कुतुब को "सिह़ाह़ सित्ता" कहते हैं इन में से एक किताब सुनने अबी दाऊद शरीफ़ में है : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसन्दीदा तरीन खाना "रोटी का सरीद" और "ह़ैस का सरीद" था। (ابوداؤد، 3/492، حدیث:3783)

शर्ह़े ह़दीस : रोटी का सरीद येह है कि शोरबे में रोटी के टुकड़े गला लिए जाएं ह़त्ताकि बोटियां भी इस में ह़ल कर ली जाएं येह निहायत लज़ीज़ ज़ूद ह़ज़म खाना है। ह़ैस के लुग़वी माना हैं मख़्लूत चीज़, इस्तिलाह़ में खजूरें और मख्खन के मख़्लूत खाने को ह़ैस कहते हैं। येह हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत पसन्द था येह भी निहायत लज़ीज़ होता है, छुहारा और खजूर वैसे भी मुक़व्वी चीज़ है, मख्खन से मिल कर इस की ख़ुश्की कम हो जाती है, लज़्ज़त भी ज़ियादा हो जाती है और नुक़्सान भी जाता रहता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/38)

अमीरे अहले सुन्नत की तरग़ीब और सरीद बनाने का त़रीक़ा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : उ़मूमन खाने के बाद बरतनों में बचा हुवा सालन, हांडी में लगे हुवे खाने के ज़र्रात और बची हुई रोटियों के टुकड़ों को ज़ाएअ़ कर दिया जाता है ह़ालांकि खाने के वोह ज़र्रात जो खाए जा सकते हों उन्हें फेंक देना इसराफ़ है जो सरासर ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। लिहाज़ा खाने के बचे हुवे अज्ज़ा को फेंक देने के बजाए उन की सरीद बना ली जाए। सरीद बनाने का त़रीक़ा येह है कि जो कुछ खाना बचे (यानी सालन, दाल, और चावल वग़ैरा) उसे फ़्रीज में मह़फ़ूज़ कर लें। जब येह बचा हुवा खाना ज़ियादा मिक़दार में जमा हो जाए तो उन सब को एक साथ पकाने के लिए हांडी में डाल दें और ऊपर से रोटी के टुकड़े डाल कर उस में भिगो लें, सालन कम हो तो थोड़ा पानी

मिला लें और ह़स्बे ज़ायक़ा नमक मिर्च और ज़ीरा डाल कर उसे ढक दें और कोई वज़नी चीज़ उस के ढक्कन पर रख दें, फिर उस को ख़ूब अच्छी त़रह़ पकाएं। जब अन्दाज़ा हो जाए कि येह ख़ूब अच्छी त़रह़ पक चुका है तो उस को थाल में निकालें और ऊपर से खजूर के टुक्ड़े डाल दें इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه खाना ज़ाए होने से भी बच जाएगा और बेहतरीन ग़िज़ा भी तय्यार हो जाएगी। अगर कोई रोटी के टुक्ड़े और ग़िज़ा के दाने वग़ैरा से इस त़रह़ सरीद न बनाए तो वोह उन्हें फेंकने के बजाए मुर्ग़ियों, च्यूंटियों या बकरियों को खिला दे तो भी येह ग़िज़ा ज़ाए होने से बच जाएगी।

(मदनी मुज़ाकरा : 4 सफ़र शरीफ़ 1440, हिजरी)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! यहां तक रमज़ानुल करीम में गुज़श्ता सालों में दुनिया के मुख़्तलिफ़ ममालिक में क्या क्या हुवा करता था इस का कुछ बयान था अब اِنْ شَآءَاللّٰه चन्द ऐसे ममालिक का ज़िक्र किया जाएगा जहां रमज़ानुल करीम की तशरीफ़ आवरी पर ह़ालिया (current) क्या मामूलाते ज़िन्दगी और इ़बादात की कैफ़िय्यात होती हैं सब से पहले मदीनए पाक से शुरूअ़ करते हैं चूंकि हमारी पहली और आख़िरी मन्ज़िल मदीना ही है।

﴾1﴿ मदीनए पाक में रमज़ानुल करीम

मदीनए पाक में यूं तो सारा ही साल रह़मत, बरकत और रूह़ानिय्यत भरा माह़ौल होता है, ह़रमैने त़य्यिबैन में ह़ज के बाद सब से ज़ियादा रश (crowd) "रमज़ानुल करीम" में होता है। ह़दीसे पाक में रमज़ानुल करीम में उ़मरा करने की तरग़ीब मौजूद है।[1] दुनिया के कोने कोने से आ़शिक़ाने रसूल माहे रमज़ान मक्के

---

1 ... फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : रमज़ानुल मुबारक में उ़मरा करना मेरे साथ ह़ज करने के बराबर है। (بخاری، 1/614، حدیث:1863)

और मदीने में गुज़ारने के लिए ह़ाज़िर हो जाते हैं। इस माहे मुक़द्दस में यहां की ज़ाहिरी रौनक़ें भी उ़रूज पर होती हैं। मस्जिदैने करीमैन में ह़ाज़िर होने वालों की तादाद लाखों में होती है।

रमज़ानुल करीम की आमद पर अ़रब शरीफ़ में निज़ामे ज़िन्दगी बदल जाता है, इदारों में आठ घंटे काम करने वालों की ड्यूटी में दो घंटे कम कर दिये जाते हैं, मदीनए पाक की फ़ज़ाओं में हर वक़्त ख़ुशबू ही ख़ुशबू आती है जिस से आ़शिक़ाने रसूल मह़ज़ूज़ (यानी लुत्फ़ अन्दोज़) होते हैं अलबत्ता माहे मुक़द्दस रमज़ानुल करीम में मस्जिदे नबवी शरीफ़ के अत़राफ़ में ख़ुशबू का छिड़काव किया जाता है, पूरे अ़रब शरीफ़ में जेलों में बन्द क़ैदियों की सज़ाओं में तख़्फ़ीफ़ (यानी कमी) और बाज़ों को रिहाई दे दी जाती है, दिन में दुकानें बन्द या कम वक़्त के लिए खुलती हैं अलबत्ता रात देर गए तक खुली रहती हैं, बाज़ारों और मार्केटस वग़ैरा को रमज़ानुल करीम के इस्तिक़बाल के लिए सजाया जाता है, रमज़ानुल करीम की आमद से एक आध माह पहले कई अश्या की क़ीमतों में 50 से 60 फ़ीसद तक कमी कर दी जाती है, सदक़ा व ख़ैरात करने का रिवाज काफ़ी बढ़ जाता है, कई आ़शिक़ाने रसूल इफ़्तार करवाने के लिए रोज़ेदारों को बुला बुला कर अपने सुफ़रे (यानी दस्तरख़्वान) पर इफ़्तार करने की तरग़ीब दिलाते हैं कि हमारे साथ इफ़्तार कीजिए। कहीं कहीं एक घर में जमा हो कर इ़बादत करने का भी रुजह़ान है। वक़्ते इफ़्तार कई मक़ामात पर मसाजिद के बाहर एक ख़ैमा सा लगाया जाता है जिस पर "इफ़्तार साइम" (यानी रोज़ादार के लिए इफ़्तारी) लिखा होता है, नमाज़े मग़रिब से पहले इसी मक़ाम पर क़ित़ार में बिठा कर इफ़्तार करवाया जाता है फिर मस्जिद में नमाज़ के लिए जाते हैं।

आशिक़ाने माहे रिसालत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

शोरे महे नौ सुन कर तुझ तक मैं दवां आया साक़ी मैं तेरे सदक़े मए दे रमज़ां आया

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 48)

अल्फ़ाज़ मआनी : शोर : एलान। **महे नौ** : नए महीने का चांद, **दवां आना** : भाग भाग कर आना, **साक़ी** : पिलाने वाला, **मए** : शराबे इश्क़े रसूल

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! रमज़ानुल करीम के नए चांद की आमद की ख़बर सुन कर मैं भागा भागा आप की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर हो गया हूं। मेरे करीम आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! करीम रब का करीम महीना रमज़ानुल करीम आ गया है, मैं आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के करमे करीमाना पर क़ुरबान ! मुझे शरबते दीदार से नवाज़ कर अपनी महब्बत व इश्क़ का जाम पिला दीजिए।

मुफ़्ती फ़ैज़ अहमद अवैसी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (आला हज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने) येह अश्आर उस वक़्त कहे, जिस साल रमज़ान शरीफ़ का पूरा महीना नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में गुज़ारने की तमन्ना और हसरत ले कर मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए थे और वहीं से हज़ अदा किया उस के बाद वापस तशरीफ़ लाए। (शर्हे हदाइक़े बख़्शिश, 2/164)

आशिक़े रमज़ान, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं :

मुझ को मदीने में रमज़ान काश ! मुयस्सर हो रहमान

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴿2﴾ इराक़ में रमज़ानुल करीम

मुल्के मुर्शिद, दयारे ग़ौसे पाक, इराक़ शरीफ़ में रमज़ानुल करीम की आमद पर मुख़्तलिफ़ तब्दीलियों के बारे में इत्तिलाअ मिली, यहां के आशिक़ाने

रसूल एक दूसरे को **"रमज़ानुल मुबारक"** कहते हैं। बाज़ारों, घरों और मसाजिद को सजाया जाता है और ख़ुशी के कलिमात लिख कर लगाए जाते हैं और लाइटिंग भी की जाती है। नमाज़ियों की तादाद में इज़ाफ़ा हो जाता है। चन्द मख़्सूस मक़ामात पर ख़त्मे क़ुरआन की तरकीब होती है। इन्फ़िरादी तौर पर तिलावते क़ुरआने करीम करने वालों की तादाद बढ़ जाती है और बाज़ आशिक़ाने क़ुरआन ख़त्मे क़ुरआन की सआदत पाते हैं। एतिकाफ़ का एहतिमाम बड़े शहरों में कम और गांव में और शुमाली इराक़ में ज़ियादा किया जाता है। शबे क़द्र में मसाजिद में महाफ़िल क़ाइम की जाती हैं जिस में रात इबादत में गुज़ारने का एहतिमाम होता है, ताक़ रातों में क़ियामुल लैल (यानी रात जाग कर इबादत करने) और बा जमाअत नवाफ़िल का एहतिमाम भी किया जाता है। बच्चों को नेक कामों का आदी बनाने के लिए मसाजिद में मुख़्तसर कोर्सिज़ और इफ़्तारी का इन्तिज़ाम किया जाता है ताकि बच्चे इस तरह शौक़ से आएं, घरों में भी तरग़ीब दिलाई जाती है। इराक़ शरीफ़ में इफ़्तारी की डिशों में लस्सी, ख़जूर और दाल के शोरबे का एहतिमाम होता है।

मौला तू बहरे रमज़ान मुझ को बना दे नेक इन्सान

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾3﴿ इन्डोनेशिया में रमज़ाने करीम

आबादी के एतिबार से दुनिया का सब से बड़ा इस्लामी मुल्क इन्डोनेशिया है, इस में मुख़्तलिफ़ बिरादरियों (communities) और मसाजिद वग़ैरा की जानिब से सड़कों (roads) बाज़ारों (markets) और दफ़ातिर (offices) में रमज़ानुल करीम की आमद पर "मरहबा बिका रमज़ान" (यानी ऐ रमज़ाने करीम ! हम तुझे मरहबा कहते हैं) के बैनर्ज़ और बोर्ड वग़ैरा लगा कर इस माहे मुबारक का

इस्तिक़बाल किया जाता है और यहां के आशिक़ाने रसूल एक दूसरे को अपनी इन्डोनेशियन ज़बान में मुबारकबाद देते हैं, जिस का उर्दू तर्जमा है : आप को रोज़े की इबादत मुबारक हो, रमज़ान से क़ब्ल मसाजिद की सफ़ाई और सजावट की जाती है। मसाजिद में बैनर्ज़ और क़ुरआनी आयात लगाई जाती हैं, घरों में सादा मगर ख़ूबसूरत सजावट होती है।

यूं तो इन्डोनेशिया की हर मस्जिद में रोज़ाना इफ़्तार का सिलसिला होता है लेकिन पूरे माहे रमज़ान में इफ़्तार का एक बड़ा प्रोग्राम करवाने का रिवाज है जिस के लिए बाक़ाइदा चन्दा किया जाता है। कई आशिक़ाने रसूल इफ़्तार के वक़्त घर से खाना मस्जिद में भिजवाते हैं क्यूंकि कई आशिक़ाने रसूल मस्जिद में इफ़्तार करते हैं। रमज़ानुल करीम के आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में मुख़्तलिफ़ मसाजिद में लोग रात को हाज़िर हो कर दो या तीन घंटे क़ियामुल लैल करते हैं जिस में चार या आठ रकअत नमाज़ पढ़ी जाती है। कई सुपर मार्केटस रमज़ान डिस्काउन्ट देती हैं, हुकूमत की जानिब से बाज़ अवक़ात सस्ते बाज़ार क़ाइम किए जाते हैं जिस में ज़रूरी अश्या पर ख़ुसूसी पैकेजिस मुतआरिफ़ करवाए जाते हैं।

फ़ज़ाएं मुनव्वर, समां कैफ़ आवर हर इक लम्हा रमज़ां, का रौनक़ भरा है
इबादत में लज़्ज़त, तिलावत में रिक़्क़त जो है बख़्त बेदार वोह पा रहा है

﴾4﴿ मराकिश में रमज़ाने करीम

मराकिश (morrocco) की बात करें तो वहां करोड़ों मालिकियों के पेशवा, आशिक़ों के इमाम, सच्चे आशिक़े रसूल इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِعَلَيْه के मुक़ल्लिदीन की कसरत है। रमज़ाने करीम की तशरीफ़ आवरी पर अवाम में एक दूसरे को मुबारकबाद देने का बहुत रिवाज है बल्कि जुमुआ की मुबारकबाद का

भी रिवाज है। यहां भी आमदे रमज़ान पर बाज़ारों, गलियों और घरों को सजाया जाता है, मराकिश के आशिक़ाने रसूल का तिलावते क़ुरआने करीम के हवाले से ज़ौक़ो शौक़ दीदनी (यानी देखने के क़ाबिल) है, बच्चा बच्चा क़ुरआने करीम पढ़ने की कोशिश करता है, सारा साल रोज़ाना मग़रिब की नमाज़ के बाद लोग मस्जिद में क़ुरआने करीम की तिलावत करते हैं। शबे क़द्र के हवाले से बाज़ मसाजिद में इन्तिज़ाम होता है और बाज़ जगहों पर रोज़ाना भी कुछ न कुछ शब बेदारी होती है। काम काज वाले रोज़ेदारों और स्कूल जाने वाले बच्चों की आसानी के लिए पूरे मुल्क में एक घंटा पीछे कर दिया जाता है ताकि सहरी के बाद कुछ आराम कर के येह अपने मामूलात की तरफ़ रवाना हों सकें।

इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के फ़ैज़ान से मालिकी हज़रात में इश्क़े रसूल का वस्फ़ नुमायां है। اَلْحَمْدُلِلّٰه मराकिश में माहे मीलाद रबीउ़ल अव्वल में जशने विलादते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी में जुलूसे मीलाद निकलता है, लोग इसे शम्अ़ का जुलूस कहते हैं क्यूंकि इस में बकसरत शमऐं जलाई जाती हैं। येह मुबारक अन्दाज़ पिछले तक़रीबन 400 सौ साल से चला आ रहा है।

मैं इश्क़े मुहम्मद में रोया करूं काश ख़ुदा ! तुझ से येह बहरे रमज़ां दुआ है
येह क़ुरआन रमज़ां में नाज़िल हुवा है इसी में शबे क़द्र की भी अ़ता है

﴾5﴿ नाइजीरिया में रमज़ान करीम

नाइजीरिया अफ़्रीक़ा का सब से ज़ियादा आबादी वाला मुल्क है और यहां मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद आबाद है। यहां भी इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मुक़ल्लिदीन की अक्सरिय्यत है। माहे मेहरबान माहे रमज़ान की आमद पर नाइजीरिया में कुछ तब्दीलियां देखने को मिलती हैं। लोग रोज़ा रख कर सारा दिन

मेहनत मज़दूरी वाला काम करते हैं। आम दिनों में भी नमाज़ियों की तादाद अच्छी ख़ासी होती है जबकि रमज़ानुल करीम में मज़ीद बढ़ जाती है। अस्र के बाद मार्केटस बन्द हो जाती हैं, मालदार लोग जगह जगह इफ़्तारियां करवाते हैं। नमाज़े इशा और तरावीह पढ़ने के बाद लोग सो जाते हैं फिर रात एक बजे उठ कर नफ़्ल पढ़ते हैं। रात के एक बजे ऐसी रौनक़ लगती है कि देखने वाले को लगे कि येह दिन का वक़्त है। रमज़ानुल करीम के आख़िरी दस दिनों में एक ख़त्मे क़ुरआने पाक और बाज़ मसाजिद में तीन ख़त्मे क़ुरआन भी किए जाते हैं। इफ़्तार में इन का एक मख़्सूस क़िस्म का गरमा गरम शरबत होता है उस के साथ खजूर खाते हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه नाइजीरिया में पिछले तक़रीबन तीन साल से आशिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के तहत एतिकाफ़ करवाने का सिलसिला है। एक मस्जिद में साठ से सत्तर अफ़राद भी मोतकिफ़ हो जाते हैं।

मक़्बूल जहां भर में हो "दावते इस्लामी" सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार ! मदीने का

﴾6,7﴿ टोगो (togo) और बेनिन (benin) में रमज़ानुल करीम

अफ़्रीक़ा के मुल्क "टोगो" का मामूल नाइजीरिया से कुछ मिलता जुलता है अलबत्ता यहां रमज़ानुल करीम की आख़िरी तमाम रातों में रात एक बजे से सहरी तक इबादत करने का मामूल होता है। जब कि अफ़्रीक़ा के एक दूसरे मुल्क "बेनिन" (benin) के मामूलाते रमज़ान में एक नुमायां तब्दीली येह है कि यहां के आशिक़ाने रसूल रोज़ाना नमाज़े ज़ोहर ता अस्र क़ुरआने करीम की तिलावत और अस्र ता मग़रिब **"तफ़्सीरे क़ुरआन"** का हल्क़ा लगाते हैं और फिर इज्तिमाई तौर पर इफ़्तार की तरकीब होती है।

﴾8﴿ कुवैत में रमज़ाने करीम

मालूमात के मुताबिक़ कुवैत में माहे रमज़ान शरीफ़ की आमद पर मसाजिद में रंग व रौग़न करवाया जाता है। नमाज़ियों की तादाद पहले से बढ़ जाती है पड़ोसियों और रिश्तेदारों में इफ़्तारी भेजने का भी एहतिमाम किया जाता है नीज़ रमज़ानुल मुबारक में ज़रूरी अश्या पर डिस्काउन्ट भी दिया जाता है, सदक़ात व ख़ैरात जमा किए जाते और नमाज़े ईद के लिए ख़ूब एहतिमाम किया जाता है।

﴾9﴿ नॉर्वे में रमज़ानुल करीम

ग्लासगो (स्कॉटलैंड) के हवाले से मालूमात मिलीं कि माहे रमज़ानुल मुबारक का अदब व एहतिराम कुछ न कुछ हद तक ग़ैर मुस्लिम भी करते हैं अगर इन के पास कोई मुसलमान काम करता है तो उन्हें मालूम होता है कि येह इन का fasting month (यानी रोज़ा रखने का महीना) है। इस एहसास की वज्ह से कई दफ़ातिर में मुसलमान मुलाज़िमीन के लिए नमाज़ पढ़ने की जगह और इफ़्तारी का मुनासिब इन्तिज़ाम कर दिया जाता है ताकि आशिक़ाने रमज़ान बा आसानी अपने दीनी फ़राइज़ अदा कर सकें। रमज़ानुल मुबारक की आमद से क़ब्ल बाज़ आशिक़ाने रमज़ान एक दूसरे को खजूर का तोहफ़ा पेश करते हैं और उन की ख़्वाहिश होती है कि उन की दी हुई खजूरों से रोज़ा इफ़्तार किया जाए। दावते इस्लामी समेत कई आशिक़ाने रसूल के मराकिज़, मदारिस और मसाजिद में मुकम्मल क़ुरआने करीम की तिलावत और दर्से क़ुरआने करीम का एहतिमाम किया जाता है।

बाज़ अलाक़ों में जहां मसाजिद क़रीब नहीं होतीं, वहां मुसलमान अपने घरों या क़रीबी मराकिज़ में तरावीह और इफ़्तार का बन्दोबस्त करते हैं। मुसलमानों

के बाहमी प्यार व महब्बत भरे सुलूक को देख कर बसा अवक़ात ग़ैर मुस्लिमों के इस्लाम क़बूल करने के वाक़िआत भी हैं। बाज़ ग़ैर मुस्लिमों के स्टोर्ज़ में भी माहे रमज़ानुल मुबारक के मौक़अ पर बाक़ाइदा **"रमज़ान काउन्टर"** क़ाइम किए जाते हैं, जहां सहरी व इफ़्तारी में खाने पीने की ज़रूरी चीज़ें रखी जाती हैं और उन पर ख़ुसूसी रिआयतें भी दी (यानी क़ीमतें कम की) जाती हैं।

झूमो झूमो फिर आ गया रमज़ां वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की
आया अब आ गया महे यज़दां वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

﴾10﴿ नेपाल में रमज़ानुल करीम

नेपाल में आमदे रमज़ान पर सरकारी सत्ह पर ख़ास एहतिमाम नहीं, अलबत्ता तक़रीबन हर सूबे, ज़िलए, शहर और गांव में मसाजिद व मदारिस के ज़रीए इस माहे मुबारक की आमद के एलानात किए जाते हैं। नेकियों में रग़बत, गुनाहों से नफ़रत जो कि माहे रमज़ान का ख़ास तोहफ़ा है इस लिए रमज़ानुल करीम की आमद पर जराइम व गुनाहों में वाज़ेह तौर पर कमी हो जाती है नीज़ अख़्लाक़ी हवाले से लोगों में मुस्बत तब्दीली नज़र आती है, अगर यूं कहें तो ग़लत न होगा कि रमज़ानुल करीम जैसा आपसी अदब व एहतिराम किसी और महीने में देखने को नहीं मिलता। नमाज़ियों की अच्छी तादाद मसाजिद की तरफ़ रुख़ करती है। रमज़ानुल करीम में ज़कात व फ़ित्रा की अदाएगी और ग़रीबों में राशन की तक़्सीम का रुजहान देखा जाता है। इफ़्तार दस्तरख़्वान का भी एहतिमाम होता है।

बहरे रमज़ा मेरे ख़ुदा मुझ को आशिक़े मुस्तफ़ा बना मुझ को
दे दे इश्क़े नबी का सरमाया वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

﴾11﴿ अमरीका में रमज़ानुल करीम

मुबल्लिग़े दावते इस्लामी के ज़रीए अमरीका के ह़वाले से रमज़ानुल करीम के बारे में जो मालूमात मिलीं वोह येह हैं कि दुनिया भर की त़रह़ यू एस ए (usa) में भी रमज़ानुल मुबारक की आमद होते ही मुस्लिम कम्यूनिटी में तक़रीबन हर उ़म्र के अफ़राद ख़ुशी का इज़हार करने के साथ साथ एक दूसरे को मुबारकबाद देते हैं। घरों और मसाजिद में ख़ूबसूरत अन्दाज़ में रमज़ान मुबारक के बैनर्ज़ लगाए जाते और लाइटिंग की जाती है । दीगर महीनों और अय्याम की ब निस्बत रमज़ानुल करीम में मसाजिद और इस्लामिक सेन्टर्ज़ में बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने वालों की तादाद बढ़ जाती है, यहां अक्सर मसाजिद और इस्लामिक सेन्टर्ज़ में ख़वातीन के लिए अलग से पर्दे की रिआ़यत के साथ नमाज़ और क़ुरआने करीम की कलासिज़ वग़ैरा के लिए जगह होती है, कई मसाजिद और इस्लामिक सेन्टर्ज़ में रोज़ाना इफ़्त़ार का एहतिमाम होता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ऐसे मक़ामात पर अ़स्र से तरावीह़ के इख़्तिताम तक बड़ी रौनक़ होती है। घरों में दोस्त और रिश्तेदारों को मदऊ़ कर के (यानी दावत दे कर) इफ़्त़ार का एहतिमाम किया जाता है। मुस्लिम कम्यूनिटी का एक दूसरे को मुबारकबाद देने और एक दूसरे को दावत दे कर सह़री व इफ़्त़ार करने का एहतिमाम तो होता ही है ग़ैर मुस्लिम भी मुस्लिम कम्यूनिटी को मुबारकबाद देते हैं, शबे क़द्र और ख़त्मे क़ुरआन पर बड़े रूह़ानी और रिक़्क़त अंगेज़ मनाज़िर होते हैं।

भाइयो बहनो ! करो सब नेकियों पर नेकियां
पड़ गए दोज़ख़ पे ताले क़ैद में शैत़ान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 705)

(जारी है...)

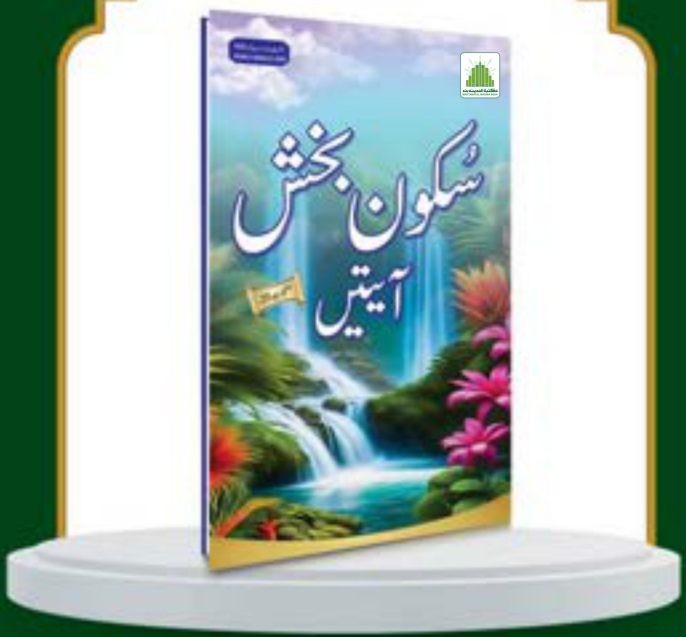

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025